Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC – CSE

सिविल सेवा परीक्षा

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर I – भाग – 2

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत

SIERRA INNOVATIONS

IAS

पेपर 1 भाग 2

प्राचीन एवं मध्यलाकीन भारत

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत** • पुरातत्व स्रोत • साहित्यिक स्रोत	**1**
2.	**पाषाण युग** • पुरापाषाण काल (Paleolithic Age) ○ निम्न पुरा पाषाण काल ○ मध्य पुरापाषाण काल ○ उत्तर पुरापाषाण काल • मध्य पाषाण काल (Middle Stone Age) ○ विशेषताएं ○ महत्वपूर्ण स्थल • नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल ○ विशेषताएं ○ महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल	**7**
3.	**ताम्र पाषाणिक काल(3000 500BC)** • विशेषताएं ○ ताम्रपाषाण संस्कृति की अन्य विशेषताएं • महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण संस्कृतियां और उनकी विशेषताएं • अन्य ताम्रपाषाण स्थल • महापाषाण (मेगालिथ) ○ महापाषाण संस्कृतियों की उत्पत्ति और प्रसार ○ दक्षिण भारत में महापाषाण संस्कृति	**14**
4.	**सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)** • सिंधु घाटी सभ्यता की खोज • हड़प्पा सभ्यता के चरण • हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल ○ सनौली • सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएं • पतन	**21**
5.	**वैदिक काल (1500 600BC)** • वैदिक साहित्य ○ ब्राह्मण ग्रन्थ ○ आरण्यक ○ उपनिषद् ○ वेदान्त ○ वेदांग	**31**

	• प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व 1000 ईसा पूर्व) ○ भौगोलिक पृष्ठभूमि ○ राजनीतिक संरचना ○ सामाजिक संरचना ○ आर्थिक संरचना ○ शिक्षा ○ संस्कृति और धर्म • उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व 600 ईसा पूर्व) ○ भौगोलिक विस्तार ○ राजनीतिक संरचना ○ समाज ○ महिलाओं की स्थिति ○ उत्तर वैदिक काल में विवाह के प्रकार ○ शिक्षा ○ भोजन और पोशाक ○ सामाजिक संरचना ○ आर्थिक संरचना ○ संस्कृति और धर्म	
6.	**बौद्ध धर्म और जैन धर्म** • उत्पत्ति के कारण • बौद्ध धर्म ○ गौतम बुद्ध ○ बुद्ध के शिष्य ○ बुद्ध की मृत्यु के बाद ○ ब्रह्मविहार ○ बौद्ध धर्म की शिक्षा ○ बौद्ध संघ ○ बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण पहलू ○ बौद्ध साहित्य ○ बोधिसत्त्व ○ बौद्ध धर्म के संप्रदाय ○ बौद्ध परिषद ○ बुद्ध की विभिन्न मुद्राएं • संकेत और उनके अर्थ ○ बौद्ध वास्तुकला ○ बौद्ध धर्म के पतन के कारण ○ बौद्ध धर्म से संबंधित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल ○ बौद्ध धर्म का महत्व ○ प्राचीन भारत पर बौद्ध धर्म का प्रभाव ○ बौद्ध धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण शब्द • जैन धर्म ○ वर्धमान महावीर (540 468 ईसा पूर्व) ○ महावीर की शिक्षा ○ जैन संघ ○ जैन धर्म की शिक्षा	**41**

	○ जैन प्रतीक ○ जैन धर्म के संप्रदाय ○ जैन साहित्य ○ जैन वास्तुकला ○ जैन परिषद ○ जैन धर्म के शाही संरक्षक ○ जैन धर्म के प्रसार के कारण ○ जैन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच समानताएं ○ जैन धर्म के पतन के कारण ○ भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान ○ अन्य नास्तिक संप्रदाय	
7.	**महाजनपद काल (600 300 BC)** • महाजनपद • मगध के उदय के कारण • हरण्यक राजवंश (545 412 ईसा पूर्व) ○ बिंबिसार (544 492 ईसा पूर्व) ○ अजातशत्रु (492 460 ईसा पूर्व) ○ उदयिन (460 444 ईसा पूर्व) • शिशुनाग राजवंश (413 ईसा पूर्व से 345 ईसा पूर्व) ○ शिशुनाग ○ कालाशोक • नंद राजवंश (345 321 ईसा पूर्व) ○ महापद्म नंद ○ धनानंदनंद • महाजनपद के युग में सामाजिक और भौतिक जीवन • महाजनपद के युग के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था • कानूनी और सामाजिक व्यवस्था विदेशी आक्रमण ○ फारसी आक्रमण ○ भारत ईरानी व्यापार में वृद्धि ○ मैसेडोनिया/सिकंदर आक्रमण (327 325 ई.पू.) ○ सिकंदर के आक्रमण का प्रभाव	**67**
8.	**मौर्य सम्राजय** • भौगोलिक विस्तार • मौर्य साम्राज्य के स्रोत ○ पुरातात्विक स्रोत ○ अशोक के शिलालेख ○ अन्य प्रासंगिक और महत्वपूर्ण शिलालेख • साहित्यिक स्रोत ○ भारतीय स्रोत ○ विदेशी स्रोत • मौर्यों की उत्पत्ति • मौर्य राजवंश ○ चंद्रगुप्त मौर्य (321 297 ईसा पूर्व) ○ बिन्दुसार (297 273 ईसा पूर्व)	**78**

	○ अशोक (268 232 ईसा पूर्व) • उत्तर मौर्य 232 ईसा पूर्व 185 ईसा पूर्व ○ दशरथ मौर्य ○ संप्रति मौर्य ○ शालिशुका मौर्य ○ देववर्मन मौर्य ○ शतधन्वन मौर्य • मौर्य प्रशासन ○ केंद्रीय प्रशासन ○ राजनीतिक इकाइयाँ ○ साम्राज्य ○ प्रांतीय सरकार ○ स्थानीय प्रशासन ○ सेना ○ परिवहन ○ न्याय प्रणाली ○ गुप्तचर व्यवस्था ○ संचार तंत्र • मौर्य अर्थव्यवस्था ○ कर संरचना और शासन • समाज ○ कला और वास्तुकला	
9.	**मौर्योत्तर काल** • मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण • इंडो यूनानी/बैक्ट्रियन यूनानी ○ डेमेट्रियस (बैक्ट्रिया का राजा) ○ हरमाईस ○ महत्त्व • शक / सीथियन ○ मौस (मोगा) ○ क्षहारात (प्राकृत खरात) ○ कार्दम वंश • सीथो पार्थियन/ शक पहलव ○ कुषाण/ यूची/ टोर्चियन • मध्य एशियाई घुसपैठ का कालक्रम • मध्य एशियाई संपर्कों का प्रभाव • स्वदेशी शासक राजवंश ○ शुंग (185 73 ईसा पूर्व) ○ कण्व (72 ईसा पूर्व से 28 ईसा पूर्व) ○ सातवाहन (60 ईसा पूर्व 225 ईस्वी) • कलिंग का चेती/चेदि वंश (पहली शताब्दी ईसा पूर्व)	**95**
10	**संगम युग** • संगम का अर्थ संगठन • संगम साहित्य का संग्रह • संगम शब्दावली	**107**

	• संगम युग के महत्वपूर्ण राज्य ○ पांड्या ○ चोल (चोलमंडलम) ○ चेर • प्रारंभिक पांड्या साम्राज्य ○ नेदुनचेलियन II ○ सामाजिक आर्थिक स्थिति ○ पांड्यों का पतन ○ उत्तर पांड्य ○ महत्वपूर्ण राजा ○ बाद के पांड्यों का पतन • चोल • चेर साम्राज्य • संगम युग के दौरान जीवन ○ आर्थिक जीवन ○ सामाजिक जीवन ○ पोशाक और आभूषण ○ राजनीति और प्रशासन ○ धार्मिक जीवन ○ कानून और न्याय • संगम साहित्य	
11.	**गुप्त युग** • गुप्त काल के अध्ययन के स्रोत • गुप्ता वंश के शासक ○ श्रीगुप्त • गुप्त वंश के पहले राजा ○ चन्द्रगुप्त प्रथम (319 334ई.) ○ समुद्रगुप्त (335 380ई.) ○ चंद्रगुप्त द्वितीय (380 412 ई.) ○ कुमारगुप्त प्रथम (415 455 ई.) ○ स्कन्दगुप्त (455 467 ई.) ○ विष्णुगुप्त • गुप्त प्रशासन ○ नगर प्रशासन ○ सेना ○ न्यायतंत्र ○ राजस्व और व्यापार ○ खनन और धातुकर्म ○ कृषि ○ सिक्के ○ समाज ○ धार्मिक जीवन • गुप्त कला और वास्तुकला ○ विश्वविद्यालय और शिक्षा ○ विज्ञान और तकनीक	**114**

	○ गणित ○ साहित्य • गुप्त साम्राज्य का पतन	
12.	**दक्कन के वकटक** • विंध्यशक्ति प्रथम (250 270 ई.) • प्रवरसेन (270 330 ई.)	**123**
13	**गुप्तोत्तर काल** • क्षेत्रीय विन्यास का युग • उत्तर भारत के शासक राजवंश ○ मैत्रक ○ मौखरी ○ आभीर(अहीर) राजवंश ○ हूण ○ पुष्यभूति राजवंश ○ ईक्ष्वाकु ○ चालुक्य ○ कांची के पल्लव ○ त्रिकुट राजवंश ○ कदंब साम्राज्य • कालभ्रस	**125**
14	**पूर्व मध्यकालीन भारत (750 1200 AD)** • मध्यकालीन युग ○ पूर्व मध्यकालीन भारत (750 1200 ई.) • भारतीय सामंतवाद ○ सामंतवादी भारत के दौरान समाज ○ भारत में सामंतवाद का प्रभाव • गुर्जर प्रतिहार (8वीं शताब्दी 11वीं शताब्दी) ○ राजनीतिक इतिहास ○ महत्वपूर्ण राजा • बंगाल के पाल शासक (8वीं 12वीं शताब्दी) ○ राजनीतिक इतिहास ○ महत्वपूर्ण राजा ○ महत्वपूर्ण पहलू • राष्ट्रकूट (8वीं 10वीं शताब्दी) ○ राजनीतिक इतिहास ○ महत्वपूर्ण राजा ○ महत्वपूर्ण पहलू • त्रिपुरी की चेदि (कलचुरी) ○ राजनीतिक इतिहास ○ महत्वपूर्ण पहलू • बंगाल के सेन • पश्चिमी गंग • पूर्वी गंग • कश्मीर का इतिहास ○ कर्कोट राजवंश	**139**

	○ महत्वपूर्ण राजा ○ उत्पल राजवंश ○ यशस्कर राजवंश ○ हिंदू शाही राजवंश ○ महत्वपूर्ण व्यक्तित्व	
15.	**चोल साम्राज्य (850 1200 ईस्वी)** • उत्पत्ति • स्रोत • राजनीतिक इतिहास • प्रशासनिक संरचना ○ चोल ग्राम प्रशासन ○ भू राजस्व प्रशासन • कला और वास्तुकला • अर्थव्यवस्था • समाज • धर्म • पंचांग • ब्राह्मणों की स्थिति • सेना • कल्याणी के चालुक्य ○ राजनीतिक इतिहास ○ महत्वपूर्ण राजा ○ महत्वपूर्ण पहलू • चोल चालुक्य युद्ध • चोल साम्राज्य का अंत	**159**
16.	**संघर्ष की आयु (1000 1200 AD)** • देवगिरी के यादव • वारंगल के काकतीय • द्वारसमुद्र के होयसाल • राजपूतों का उदय • राजपूतों की उत्पत्ति के सिद्धांत • राजपूत राज्य ○ कन्नौज के गहड़वाल ○ चौहान ○ सोलंकी राजपूत ○ तोमर ○ मालवा के परमार ○ चंदेल • राजपूतों का महत्व	**172**
17.	**अरब आक्रमण** • अरब आक्रमण के प्रमुख कारण • सिंध की अरब विजय ○ मुहम्मद बिन कासिम • चचनामा फारसी पुस्तक • गजनवी	**182**

	○ गजनी के महमूद ○ मुहम्मद गौरी ○ तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.) ○ तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.) ○ चंदावर का युद्ध(1194) • भारत में तुर्की के आक्रमण की सफलता के कारण	
18.	**दिल्ली सल्तनत** • गुलाम/इल्बारी राजवंश (1206 1290 ईस्वी) ○ कुतुबुद्दीन ऐबक ○ आराम शाह (कुतुबुद्दीन ऐबक का पुत्र) ○ इल्तुतमिश ○ रजिया सुल्ताना ○ बलबन/उलुग खान • खिलजी वंश (1290 1320 ईस्वी) ○ जलालुद्दीन खिलजी ○ अलाउद्दीन खिलजी (1296 1316ई.) ○ अलाउद्दीन खिलजी की सैन्य विजय ○ अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक सुधार ○ सैन्य सुधार ○ बाजार सुधार • तुगलक वंश (1320 1413 ईस्वी) ○ गयासुद्दीन तुगलक ○ मुहम्मद बिन तुगलक ○ फिरोज शाह तुगलक ○ तुगलक वंश का अंत • सैय्यद वंश (1414 51ई.) ○ राजनीतिक इतिहास ○ खिज्र खान ○ मुबारक शाह ○ मुहम्मद शाह ○ आलम शाह • लोदी राजवंश (1451 1526 ईस्वी) ○ बहलोल लोदी ○ सिकंदर लोदी (1489 1517 ईस्वी) ○ इब्राहिम लोदी (1517 1526 ईस्वी) • दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन, आर्थिक और सामाजिक जीवन • दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण	**204**
19.	**विजयनगर और बहमनी साम्राज्य** • विजयनगर साम्राज्य (1336 1672ई.) • संगम वंश • सलुव वंश (1485 1505 ई.) • तुलुव वंश (1505 1570 ई.) • अराविदु राजवंश (1570 1650 ई.) • बहमनी सल्तनत (1347 1527 ई.)	**220**

	• दक्कन सल्तनत ○ अहमदनगर के निज़ाम शाही ○ बीजापुर के आदिल शाही ○ गोलकुंडा के कुतुब शाही • बरार का इमादाशाही वंश ○ बीदर का वरीदशाही वंश	
20.	**मुगल साम्राज्य** • सम्राट ○ बाबर (1526 1530 ई.) ○ हुमायूँ (1530 1540ई.) ○ सूर साम्राज्य (1540 1555 ई.) ○ अकबर (1556 1605ई.) ○ जहाँगीर (1605 1627 ई.) ○ शाहजहाँ (1628 1658 ई.) ○ औरंगजेब (1658 1707 ई.) ○ मुगल साम्राज्य का पतन • आर्थिक दुर्बलता	**237**
21.	**मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य** • मराठों का उदय • शाहजी भोंसले • शिवाजी भोंसले (1674 1680ई.) ○ शिवाजी का प्रशासन ○ राजस्व ○ सेना • संभाजी (1681 1689ई.) • राजाराम (1689 1707ई.) • शाहू (1708 1749ई.) • राजाराम द्वितीय (1749 1777 ई.) • पेशवा (1640 1818ई.) • बालाजी विश्वनाथ भट्ट (1713 1719ई.) • बाजी राव प्रथम (1720 1740ई.) • बालाजी बाजी राव I / नाना साहिब I (1740–61ई.) ○ पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761ई.) • माधव राव (1761 1772ई.) • रघुनाथ राव (1772 1773ई.) ○ पुरंदर की संधि (1776ई.) • नारायण राव (1772 1773ई.) • सवाई माधव राव (1774 1795ई.) • बाजी राव द्वितीय (1796 1818ई.) • मुगल बाद के क्षेत्र ○ बंगाल ○ अवध ○ पंजाब ○ खालसा का गठन ○ राजपूताना	**260**

<table>
<tr><td></td><td>

- गुजरात
- मालवा
- कश्मीर
- असम
- ओडिशा
- दक्षिणी भारत

</td><td></td></tr>
<tr><td>22.</td><td>

मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन

- मध्यकालीन भारत में दर्शन
- भक्ति आंदोलन
  - नयनार और अलवार
  - निर्गुण और सगुण
  - भक्ति संत
  - बंगाल में भक्ति आंदोलन
  - उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन
- मूल रूप से रामानुज के अनुयायी थे।
- बनारस और आगरा में हिंदी में अपने सिद्धांतों का प्रचार किया।
  - महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन
  - अन्य क्षेत्रों में भक्ति आंदोलन
  - उत्तर भारत में एकेश्वरवादी आंदोलन
  - महिला भक्ति कवि
  - वीरशैव/लिंगायत आंदोलन
  - भक्ति आंदोलन का महत्व
- सूफीवाद
  - सिलसिला
  - भक्ति और सूफी आंदोलन के बीच समानताएं
  - सूफी आंदोलन का महत्व
- सिख धर्म
  - गुरु नानक (1469 1539ई.)
  - गुरु अंगद (1539 1552ई.)
  - गुरु अमर दास (1552 1574ई.)
  - गुरु रामदास (1574–81ई.)
  - गुरु अर्जुन देव (1581 1606ई.)
  - गुरु हरगोबिंद (1606 1644ई.)
  - गुरु हर राय (1644 1661ई.)
  - गुरु हर किशन (1661 1664ई.)
  - गुरु तेग बहादुर (1665 1675ई.)
  - गुरु गोबिंद सिंह (1675 1708ई.)
- भारत के लिए महत्वपूर्ण विदेशी यात्री

</td><td>278</td></tr>
</table>

| CHAPTER I |

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

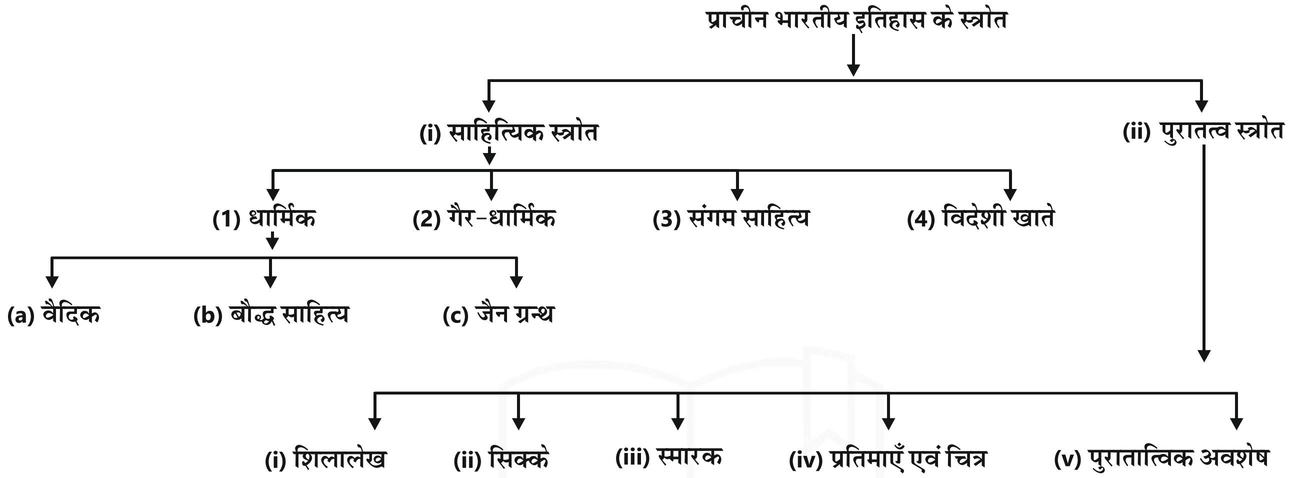

पुरातत्व स्रोत

- **मुद्राशास्त्र** - सिक्कों का अध्ययन।
- **पुरालेख**- अभिलेखों का अध्ययन।
- **पुरातत्व** = 'पुरालेख' + 'लोगिया' (पुरातन = प्राचीन और लोगिया = ज्ञान)।

1. शिलालेख / एपिग्राफ

- पुरातत्व स्रोतों का **सबसे महत्वपूर्ण, प्रामाणिक और विश्वसनीय हिस्सा।** तुलनात्मक रूप से कम पक्षपाती।
- **सबसे पुराने शिलालेख** - सम्राट अशोक- प्रमुख रूप से **ब्राह्मी लिपि में।**
- **अन्य महत्वपूर्ण शिलालेख -**

नाम	स्थान	वर्णन
नागनिका का शिलालेख	नानेघाट, **महाराष्ट्र**	सातवाहन राजा **सतकर्णी के बारे में**
नासिक शिलालेख	नासिक गुफाएँ, **महाराष्ट्र**	गौतमीपुत्र **सतकर्णी के बारे में**
प्रयाग प्रशस्ति/इलाहाबाद स्तंभ	इलाहाबाद, **उत्तर प्रदेश**	**समुद्रगुप्त के बारे में** हरिसेन द्वारा संस्कृत में लिखा गया
ऐहोल शिलालेख	**कर्नाटक**	बादामी के **चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय** के बारे में रविकीर्ति द्वारा लिखा गया।
हाथीगुम्फा शिलालेख	उदयगिरि, **ओडिशा**	**राजा खारवेल** के बारे में

2. ताँबे की प्लेट

- **'भूमि-अनुदान' के लिए उत्कीर्ण** और अनुदानग्राही को जारी किया गया।
- **ताँबे की** 3 **प्लेटें**, ताँबे की गाँठ के माध्यम से एक-दूसरे से बंधी हुई।
- **ऊपरी और अंतिम भागों को उकेरा नहीं गया है** क्योंकि ये समय के साथ धुंधले हो जाते हैं।
- उस काल की **सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जानकारी** देता है।
- **उदा**. सोहगौरा ताम्रलेख हमें गंभीर सूखे और भोजन की कमी की समस्या से निपटने के लिए अधिकारियों द्वारा किए गए उपायों के बारे में सूचित करता है।

3. सिक्के

- **व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों** और **आर्थिक और तकनीकी विकास** के बारे में सूचित करता है।
- उल्लिखित तिथियाँ हमें **राजाओं के कालक्रम** के बारे में जानने में मदद करती हैं।
- **भारत के पहले सिक्के** - **'पंचमार्क** सिक्के' आहत / पंचिंग विधि से बनाए गए।
- **संभवतः व्यापारिक संघों द्वारा** चलाए गए थे - किसी **शासक द्वारा नहीं।**
- **सिक्कों** में **शुद्धता** का अनुपात **शासक की आर्थिक स्थिति** और उसके समय की व्याख्या करता है।
- **पहला सोने का सिक्का** - **इंडो-यूनानियों द्वारा** जारी किया गया ।
- **कुषाणों** द्वारा **शुद्धतम सोने के सिक्के** जारी किये गए ।
- **सबसे** ज्यादा लेकिन **अशुद्ध सोने** के **सिक्के गुप्तों द्वारा** जारी किये गए।

4. स्मारक

- इनका अध्ययन हमें **तकनीकी कौशल, जीवन स्तर, आर्थिक स्थिति** और उस **समय की स्थापत्य** शैली की **व्याख्या** करने में मदद **करता है।**
- **शासको** या **राजवंशो** की **समृद्धि का चित्रण** करता है।
- **3 प्रमुख शैलियाँ-**
  - उत्तर में **नागर शैली**।
  - दक्षिण में **द्रविड़ शैली**।
  - दक्कन में **वेसर शैली**।

5. प्रतिमाएँ

- **हड़प्पा मूर्तिकला -** पत्थर, स्टीटाइट, मिट्टी, टेराकोटा, चूना, कांसे, हाथी दांत, लकड़ी आदि से बनी ।
  - **उपयोग** - मूर्तियाँ, खिलौने, मनोरंजन ।
- **कांस्य प्रतिमाएँ** (हड़प्पा सभ्यता) और **खिलौने** (दैमाबाद)
- **मौर्यकालीन मूर्तियाँ** - **दीदारगंज** की **यक्षी** - लोगों की समसामयिक संपन्नता और सौन्दर्य बोध।
- **कनिष्क की मूर्ति**- राजा की **विदेशी उत्पत्ति** और **विदेशी** शैली की **पोशाक**, जैसे जूते, ओवरकोट आदि।

6. चित्र

- **चित्रों के प्रारंभिक उदाहरण**- **भीमबेटका** (मध्य प्रदेश) - मध्य पाषाण काल के गुफा-निवासियों द्वारा आसपास की प्रकृति के रंगों और औजारों का उपयोग करके बनाए गए ।
- **अजंता चित्रकला** - धार्मिक विचारधारा, आध्यात्मिक शांति, आभूषण, वेशभूषा, विदेशी आगंतुकों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।
- **चोल चित्रकला** - **चोल राजव्यवस्था** के **'दिव्य राजत्व' की अवधारणा** को प्रदर्शित करती हैं।

7. पुरातत्व अवशेष

A. मृदभांड

- **आद्य-इतिहास से प्रारंभिक मध्य काल** तक मुख्य उपकरण।
- **विभिन्न वस्तुओं से बने** जैसे कटोरे, प्लेट, बर्तन आदि में।
- **संस्कृति**, **आकार**, **वस्त्र**, **सतह-उपचार** (वस्त्र, रंग, डिजाइन, पेंटिंग), मृदभांड बनाने की **तकनीक** आदि के **अनुसार विभेदित।**
- **विशिष्ट संस्कृति**/अवधि के लिए **विशिष्ट मृदभांड** समर्पित किये गए है।

B. मणिकाएँ

- **विभिन्न सामग्रियों**, जैसे, पत्थर, अर्द्ध-कीमती पत्थर (जैसे एगेट, कैल्सेडनी, क्रिस्टल, फ़िरोज़ा, लैपिस-लाजुली), कांच, टेरा कोटा, हाथीदांत, खोल, धातुओं जैसे सोना, तांबा आदि **से बने** ।
- **विभिन्न आकार** जैसे गोल, चौकोर, बेलनाकार, बैरल के आकार **के** ।
- एक **विशिष्ट अवधि** के **तकनीकी विकास** और **सौंदर्यबोध** को जानने **के लिए एक स्रोत के रूप में इस्तेमाल** किए जा सकते हैं।

C. जीव अवशेष/हड्डियाँ

- **उत्खनन** से **बड़ी मात्रा** में **हड्डियों** या **जीवों अवशेषों** का पता चला है।
- वे उस **विशेष स्थल के आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रकाश** डालते हैं।
- **संबंधित लोगों** की **आहार संबंधी आदतों को समझने में मदद** करते हैं।

D. पुष्प अवशेष

- **संबंधित लोगों** की **ऐतिहासिक पारिस्थितिकी** और **आहार संबंधी आदतों** के बारे में **जानकारी** देते हैं।

साहित्यिक स्रोत

1. धार्मिक स्रोत

- **आधार स्रोत**: ब्राह्मण ग्रंथ जैसे वैदिक ग्रंथ, सूत्र, स्मृति, पुराण और महाकाव्य।

वैदिक ग्रंथ	• **ऋग्वेद**- **सबसे पुराना** - हमें ऋग्वैदिक समाज के बारे में बताता है। • **साम वेद**, **यजुर्वेद** और **अथर्ववेद** - **उत्तर वैदिक काल** के समाज **के बारे में** जानकारी देता है। • **900 साल (1500B.C-600B.C) का इतिहास** बनाता है । • **आर्यों** की उत्पत्ति, उनकी राजनीतिक संरचना, उनके समाज, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक उपलब्धियों आदि **के बारे में जानकारी देता है**।
सूत्र	• सूत्र में पिरोए गए सुन्दर मोतियों की तरह **शब्द या स्तोत्र का संकलन**। • **वैदिक काल की जानकारी** देता है। • **छह भाग**: शिक्षा, व्याकरण, छंद, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष
उपवेद	• **आयुर्वेद** - चिकित्सा विज्ञान से संबंधित - ऋग्वेद का उपवेद। • **गंधर्व वेद** - संगीत से संबंधित- सामवेद का उपवेद। • **धनुर वेद** - युद्ध कौशल, हथियार और गोला-बारूद से संबंधित- यजुर्वेद का उपवेद। • **शिल्प वेद** - मूर्तिकला और वास्तुकला से संबंधित - अथर्ववेद का उपवेद।
स्मृति ग्रंथ	• **मनुस्मृति** - सबसे पुराना स्मृति पाठ (200B.C- 200A.D)। • **याज्ञवल्क्य स्मृति** (100A.D - 300A.D) के बीच संकलित। • **नारद स्मृति** (300A.D-400A.D) और **पाराशर स्मृति** (300A.D-500A.D) - गुप्तों की सामाजिक और धार्मिक स्थितियों के बारे में जानकारी देता है।
बौद्ध साहित्य	• **पिटक** - **सबसे पुराने** बौद्ध ग्रंथ। ○ भगवान **बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद** संकलित। ○ **3 प्रकार**- ■ **सुत्त पिटक**- धार्मिक विचारधारा और बुद्ध की शिक्षाएँ शामिल हैं। ■ **विनय पिटक**- बौद्ध संघ के नियम शामिल हैं। ■ **अभिधम्म पिटक**- बौद्ध दर्शन शामिल हैं।

	• **जातक कथाएँ** - भगवान **बुद्ध के पिछले जन्म से संबंधित उपाख्यान** - संकलन पहली शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ था लेकिन वर्तमान रूप दूसरी शताब्दी ईस्वी में संकलित किया गया था। • **मिलिंदपन्हो** - बौद्ध ग्रंथ - ग्रीक शासक **मिनांडर** (**मिलिन्द**) **और बौद्ध संत नागसेना के बीच दार्शनिक संवाद** के बारे में जानकारी देता है। • **दिव्यावदान** - **चौथी शताब्दी ईस्वी** में पूर्ण रूप से लिखा गया - **विभिन्न शासकों** के बारे में जानकारी। • **आर्यमंजुश्रीमुलकल्प** - बौद्ध दृष्टिकोण से **गुप्त साम्राज्य के विभिन्न शासकों के बारे में** जानकारी। • **अंगुत्तरनिकाय** - **सोलह महाजनपदों के नाम** देता है।
सिंहली ग्रंथ	• इसमें **दीपवंश** और **महावंश** - बौद्ध ग्रंथ शामिल हैं। • **दीपवंश** – 4वी शताब्दी ई. • **महावंश** - 5वीं शताब्दी ई. • उस समय के **सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी** प्रदान करता है। • **भारत और विदेशी राज्यों के सांस्कृतिक संबंधों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
जैन ग्रंथ	• **मुख्य ग्रंथ**- आगम ग्रंथ। • **कुल ग्रंथ**- 12 । • **आचारंगसूत्र** - आगम ग्रंथ का हिस्सा - **महावीर की शिक्षाओं** पर आधारित है और जैन संतों के आचरण के बारे में बात करता है। • **व्याख्या प्रज्ञापति / भगवती सूत्र** - **महावीर के जीवन** के बारे में । • **नयाधम्मकहा** - भगवान **महावीर की शिक्षाओं** का संकलन। • **भगवतीसूत्र** - 16 **महाजनपदों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है। • **भद्रबाहुचरित** - जैन आचार्य **भद्रबाहु** और **चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर प्रकाश** डालता है। • **परिशिष्टपर्वन** - सबसे महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ - **हेमचंद्र द्वारा** 12 **वीं शताब्दी ईस्वी** में लिखा गया।
पुराण	• **स्मृति के बाद संकलित।** • मुख्य रूप से 18 । • **प्राचीन पुराण** - मार्कंडेय पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और मत्स्य पुराण। • **बाकी बाद में बनाए गए थे।** • **मत्स्य**, **वायु** और **विष्णु पुराणों** में प्राचीन **भारतीय राजवंशों की जानकारी** मिलती हैं । • **महाभारत के युद्ध के बाद** शासन करने वाले राजवंशों **का एकमात्र उपलब्ध स्रोत।** • **विभिन्न राजवंशों** और **उनके पदानुक्रम** (निम्नतम से उच्चतम तक) **का कालक्रम** प्रदान करता है**।**
महाकाव्य	• **ब्राह्मण ग्रंथों** का एक **हिस्सा** • **सबसे महत्वपूर्ण**- **महाभारत** और **रामायण।** • **रामायण** - **वाल्मीकि** द्वारा रचित - मौर्य काल के बाद। • **महाभारत** - **वेद व्यास** द्वारा रचित - गुप्त काल में पूरा हुआ - **शुरू में** नाम **जय संहिता / भारत** रखा गया।

2. गैर-धार्मिक ग्रंथ

- **समाज के** लगभग सभी **पहलुओं पर प्रकाश** डालता है ।
- **कुछ गैर-धार्मिक ग्रंथ** हैं -
  - **पाणिनि की अष्टाध्यायी** - भारत का **सबसे पुराना व्याकरण**/साहित्य - **मौर्य-पूर्व** काल की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक **स्थिति की जानकारी।**
  - **मुद्राराक्षस**- **विशाखदत्त** द्वारा लिखित- **मौर्य काल के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
  - **अर्थशास्त्र** - **कौटिल्य** / विष्णुगुप्त / चाणक्य द्वारा लिखित - 15 **भागों में विभाजित** - भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, मौर्य युग की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
  - **पतंजलि का महाभाष्य** और **कालिदास का मालविकाग्निमित्रम** - **'शुंग वंश'** के बारे में जानकारी।
  - **वात्स्यायन का कामसूत्र** - सामाजिक जीवन, शारीरिक संबंध, पारिवारिक जीवन आदि की जानकारी प्रदान करता है।
  - **शूद्रक का 'मृच्छकटिकम्'** और **दण्डिन का 'दशकुमारचरित'** - उस काल के सामाजिक जीवन की जानकारी प्रदान करता है।

3. संगम साहित्य

- **प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य**।
- **इकट्ठे हुए कवियों द्वारा** निर्मित (संगम)।
- **डेल्टाई तमिलनाडु** में रहने वाले लोगों के **सामाजिक**, **आर्थिक** और **राजनीतिक जीवन के बारे में** बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।
- इसमें **'सिलप्पादिकारम'** और **'मणिमेकलई' शामिल** हैं।

संगम साहित्य-

संगम साहित्य	लेखक	विषय /प्रकृति/ संकेत
अगत्तीयम	अगस्त्य	अक्षरों के व्याकरण पर एक कार्य
तोल्काप्पियम (तमिल व्याकरण)	तोलकापिय्यार	व्याकरण और कविता पर एक ग्रंथ
एट्टुकाई	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पट्टुपट्टू	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पेटिनेंकिलकनक्कू (18 लघु कार्य)	-	एक उपदेशात्मक कार्य
कुरल (मुप्पाल)	तिरुवल्लुवर	राजनीति, नैतिकता, सामाजिक मानदंडों पर एक ग्रंथ
शिलप्पादिकारम	इलांगो आदिगल	कोवलन और माधवी की एक प्रेम कहानी
मणिमेकलई	सीतलै सत्तनार	मणिमेकलई का साहसिक कार्य
सेवागा चिंतामणि	तिरुत्तकरदेव	एक संस्कृत ग्रंथ
भारतम	पेरुदेवनार	अंतिम महाकाव्य
पन्निरुपदलम (व्याकरण)	अगस्त्य के 12 शिष्य	पुरम साहित्य पर एक व्याकरणिक कार्य

4. विदेशी खाते

- **ग्रीक**, **रोमन**, **चीनी** और **अरब यात्रियों** के लेखन से मिलकर बने है।
- **राजनीतिक** और **सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश** डालते है।
- **ग्रीक या रोमन लेखक -**
  - **हेरोडोटस**-
    - **विश्व के प्रथम इतिहासकार** माने जाते हैं।
    - **फारसियों की तरफ से लड़ने वाले भारतीय सैनिकों का उल्लेख** किया।

- **मेगस्थनीज**-
  - **सेल्यूकस निकेटर के राजदूत,** चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में तैनात।
  - **कार्य** - **इंडिका** - **पाटलिपुत्र** के नक्शे **का विवरण** देता है।
  - **सामाजिक संरचना**, **जाति-व्यवस्था**, **जाति-संबंध** आदि के ऊपर **उल्लेख।**
  - मूल इंडिका खो गई है।
- **एरिथ्रियन सागर का पेरिप्लस**-
  - इसे कथित तौर पर **मिस्र के तट पर** एक **मछुआरे ने लिखा** था।
  - **प्रारंभिक ऐतिहासिक काल** के दौरान **भारत-रोमन व्यापार** पर निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ **जानकारी** देता है।
  - **भारत के तट-रेखा पर बंदरगाहों**, **भारत** में **व्यापार केंद्रों, व्यापार-मार्गों** और बंदरगाहों को जोड़ने, **केंद्रों के बीच** की **दूरी**, **व्यापार** की **वस्तुओं**, **व्यापार** की वार्षिक **मात्रा**, **जहाजों के प्रकार** आदि **के बारे में** सूचित करता है।

- **चीन**
  - **फाह्यान** (**फा जियान**)-
    - **गुप्त काल के दौरान** भारत आए।
    - **बौद्ध भिक्षु** - देवभूमि (अर्थात् भारत) से ज्ञान प्राप्त करने और बौद्ध तीर्थ केन्द्रों का दौरा करने के लिए भारत आए।
  - **ह्वेनसांग** (**हुआन जांग**)-
    - **हर्षवर्धन के** शासनकाल के **दौरान** भारत का दौरा किया।
    - **बौद्ध तीर्थ स्थलों का भ्रमण** किया, **नालंदा विश्वविद्यालय में ठहरे।**
    - **बौद्ध धर्म का अध्ययन किया**, मूल बौद्ध रचनाएँ पढ़ीं, मूल पांडुलिपियाँ और स्मृति चिन्ह एकत्र किए, प्रतियां बनाईं, **हर्ष की सभा में भाग लिया**।
    - चीन में, **उन्होंने 'सी-यू-की'** (पश्चिमी क्षेत्रों पर ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स) **लिखा** - भारत में उनके अनुभव का विशद विवरण डेटा हैं।
    - **राजाओं विशेष रूप से हर्ष** और उनकी उदारता, भारत में लोगों और विभिन्न क्षेत्रों के रीति-रिवाजों, जीवन शैली आदि **की जानकारी** देता है।
- **अन्य क्रॉनिकल्स -**
  - **तारानाथ** (तिब्बती बौद्ध भिक्षु) द्वारा **कंग्यूर** और **तंग्यूर** - **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का लेखा-जोखा।**

2 CHAPTER पाषाण युग

- **प्रागैतिहासिक काल - कोई लिखित प्रमाण नहीं।**
- **सूचना का मुख्य स्रोत**- पुरातात्विक उत्खनन।
- **पल्लवरम हैंडैक्स** - भारत में **पहला पुरापाषाण उपकरण** - रॉबर्ट ब्रूस फूट (1863 ईस्वी) द्वारा खोजा गया - उन्होंने दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में पूर्व-ऐतिहासिक स्थलों की भी खोज की ।
- यह काल **मानव सभ्यता का प्रारम्भिक काल** माना जाता है।
- इस काल को **तीन भागों में विभाजित** किया जा सकता है –
  1. **पुरा पाषाण काल** (Paleolithic Age)
  2. **मध्य पाषाण काल** (Mesolithic Age)
  3. **नव पाषाण काल** अथवा उत्तर पाषाण काल (Neolithic Age)

पुरापाषाण काल (Paleolithic Age)

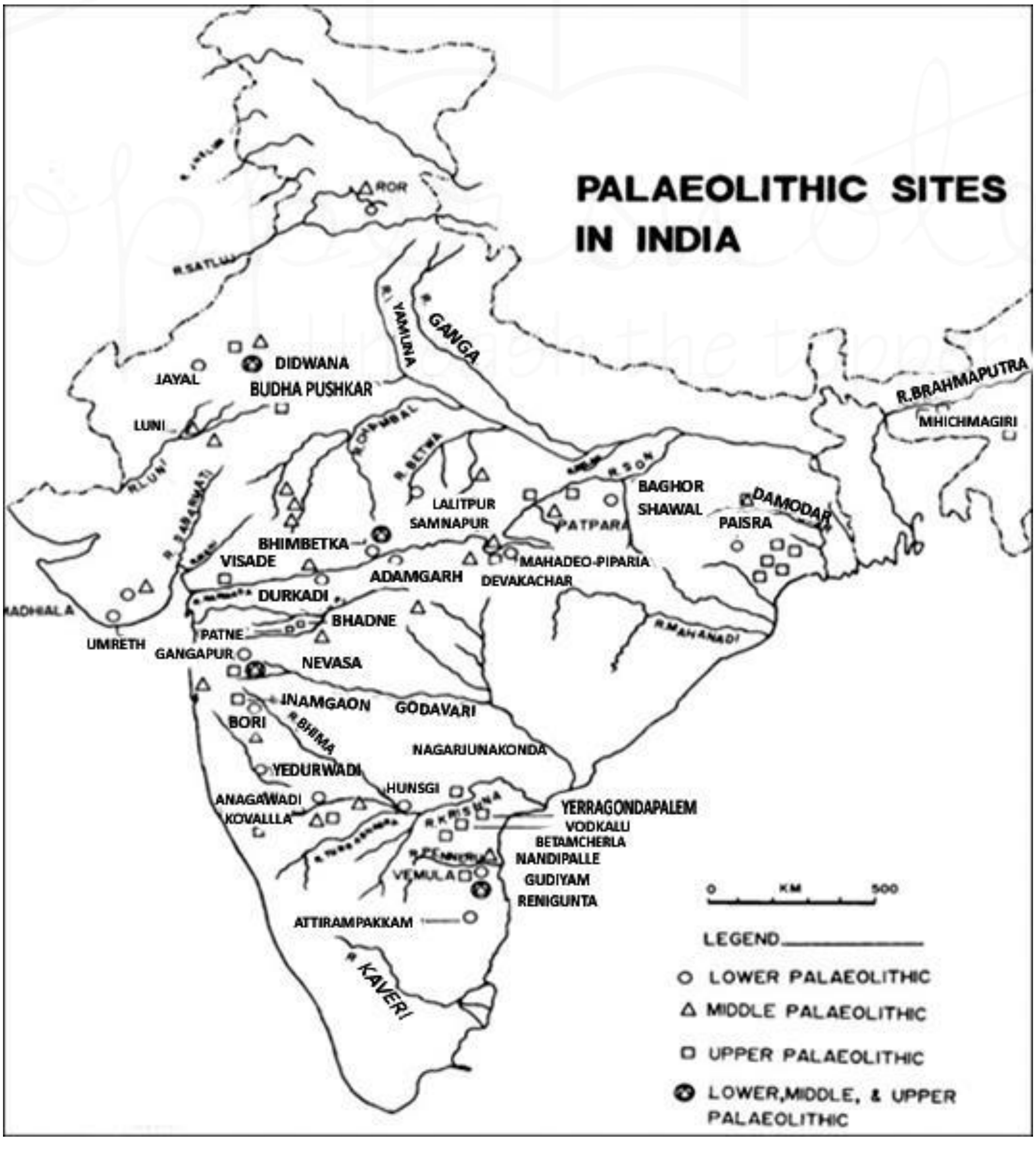

- यूनानी भाषा में Palaios प्राचीन एवं Lithos पाषाण के अर्थ में प्रयुक्त होता था।
- यह काल **आखेटक एवं खाद्य-संग्रहण काल के रूप में** भी **जाना जाता** है।
- अभी तक **भारत में पुरा पाषाणकालीन मनुष्य के अवशेष** कहीं से भी **नहीं मिले हैं**, जो भी अवशेष के रूप में मिला है, वह उस समय प्रयोग में लाये जाने वाले पत्थर के उपकरण हथियार हैं।
- **प्राप्त उपकरणों के आधार पर** यह अनुमान लगाया है कि ये लगभग **2,50,000 ई.पू.** के होंगे।
- हाल में **महाराष्ट्र के 'बोरी' नामक स्थान पर की गई खुदाई में मिले अवशेषों** से ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि इस पृथ्वी पर **'मनुष्य' की उपस्थिति लगभग 14 लाख वर्ष पुरानी** है।
- **गोल पत्थरों से बनाये गये प्रस्तर उपकरण** मुख्य रूप से **सोहन नदी घाटी में मिलते हैं।**
- **सामान्य पत्थरों के कोर तथा फ़्लॅक्स प्रणाली द्वारा बनाये गये** औजार मुख्य रूप से मद्रास, वर्तमान चेन्नई में पाये गये हैं।
- इन दोनों प्रणालियों से निर्मित **प्रस्तर के औजार सिंगरौली घाटी, मिर्ज़ापुर एवं बेलन घाटी, प्रयागराज में मिले** हैं।
- **मध्य प्रदेश के भोपाल के पास भीम बेटका में मिली पर्वत गुफायें** एवं शैलाश्रय भी महत्त्वपूर्ण हैं।
- इस समय के मनुष्यों का जीवन **पूर्णरूप से शिकार पर निर्भर** था।
- वे **अग्नि के प्रयोग से अनभिज्ञ** थे। **सम्भवतः** इस समय के **मनुष्य नीग्रेटो जाति के थे।**
- **भारत में पुरापाषाण युग को औजार-प्रौद्योगिकी के आधार पर तीन अवस्थाओं** में **बांटा जाता हैं**-

काल	**अवधि**	**अवस्थाएं**
निम्न पुरापाषाण काल	100,000 BC	हस्तकुठार और विदारण उद्योग
मध्य पुरापाषाण काल	100,000 BC – 40,000 BC	शल्क (फ़्लॅक्स) से बने औज़ार
उच्च पुरापाषाण काल	40,000 BC – 10,000 BC	शल्कों और फ़लकों (ब्लेड) पर बने औजार

A. निम्न पुरा पाषाण काल

- **विशेषताएं:**
  - **अधिकतम समय अवधि** (पूरे निम्न प्लीस्टोसिन और मध्य प्लीस्टोसिन युग की अधिकतम अवधि को कवर करता है)।
  - **नदी घाटियों का निर्माण** ।
  - **प्रारंभिक पुरुष जल स्रोत के पास रहना पसंद करते थे**, क्योंकि पत्थर के हथियार/उपकरण मुख्य रूप से नदी घाटियों में या उसके आस-पास पाए जाते हैं।
  - **मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोप** और **अफ्रीका में** फैला हुआ ।
  - **प्रारंभिक पत्थर के औजारों के साक्ष्य** - पश्चिमी यूरोप - निम्न प्लीस्टोसिन में पहले अंतर-हिमनद चरण के निक्षेप ।
  - **खानाबदोश जीवन** शैली जीते थे।
  - **शिकारी** और भोजन **संग्रहकर्ता।**
  - **निएंडरथल** जैसे पैलेंथ्रोपिक पुरुषों का योगदान (होमिनिड/मानवनुमा विकास का तीसरा चरण)
  - **सबसे पुराने निम्न पुरापाषाण स्थलों** में से एक **महाराष्ट्र में बोरी** है।
- **उपकरण:**
  - **उपकरण**- **चूना पत्थर से बने** - हाथ की कुल्हाड़ी, चॉपर और क्लीवर - खुरदरे और भारी।
  - **पहले पाषाण औजारों के निर्माण** को ओल्डोवन परंपरा के रूप में जाना जाता था।
- **प्रमुख स्थल:**
  - सोन घाटी (वर्तमान पाकिस्तान में)
  - थार रेगिस्तान

- कश्मीर
- मेवाड़ का मैदान
- सौराष्ट्र
- गुजरात
- मध्य भारत
- दक्कन का पठार
- छोटानागपुर पठार
- कावेरी नदी का उत्तरी भाग
- उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी

दो महत्वपूर्ण संस्कृतियां -

- **सोहनियाई संस्कृति:**
    - **सिंधु की** एक **सहायक नदी सोहन** नदी के नाम **पर**।
    - **स्थल**-उत्तर-पश्चिम भारत और पाकिस्तान में शिवालिक पहाड़ियाँ।
    - **निम्न पुरापाषाणकालीन पत्थर के औजार** मिले।
    - **पशु अवशेष** - घोड़ा, भैंस, सीधे दांत वाला हाथी और दरियाई घोड़ा।
    - **कंकड़ उपकरण** और **चॉपर के निक्षेप** मिले।
- **एचुलियन संस्कृति / मद्रासी संस्कृति:**
    - **फ्रांसिसी स्थल सेंट अचेउल के नाम पर।**
    - **भारतीय उपमहाद्वीप का पहला प्रभावी उपनिवेशीकरण।**
    - **भारत** में **निम्न पुरापाषाणकालीन बस्तियों के समान।**
    - **हैण्ड-एक्स** और **क्लीवर के भंडार**

B. मध्य पुरापाषाण काल

- **विशेषताएं-**
    - मुख्य रूप से **मनुष्य के प्रारंभिक रूप- निएंडरथल से जुड़ा हुआ** है।
    - **आग के उपयोग के साक्ष्य।**
    - **मध्य पुरापाषाण काल** का **मनुष्य मेहतर** था, लेकिन **शिकार** और **संग्रहण के बहुत कम साक्ष्य** मिले हैं।
    - **दफनाने से पहले मृतकों को चित्रित** किया जाता था।
    - कुछ उपकरण प्रकारों का त्याग कर और उपकरण निर्माण की नई तकनीकों को शामिल करके **ऐचुलियन संस्कृति में धीमा परिवर्तन हुआ।**
- **उपकरण -**
    - **छोटे, पतले और हल्के उपकरण।**
    - **मुख्य रूप से** बोर, पॉइंट और स्क्रेपर्स आदि बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले **फलैक्स पर निर्भर।**
    - **इस अवधि में कंकड़ उद्योग भी देखा जा सकता है।**
    - खोजे गए पत्थर बहुत छोटे / **सूक्ष्म पाषाण** थे।
    - **क्वार्टजाइट**, **क्वार्ट्ज** और **बेसाल्ट** की जगह **चर्ट** और **जैस्पर** जैसे महीन दाने वाली सिलिकाम शैलों ने ले ली।
    - **मध्य भारत और राजस्थान में कई जगहों पर** टूल फैक्ट्रियाँ **पाई जाती है**।
    - इस युग की **अधिकांश विशेषताएं निम्न पुरापाषाण काल के समान** हैं ।
- **महत्वपूर्ण स्थल:**
    - उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी
    - लूनी घाटी (राजस्थान)

- सोन और नर्मदा नदियाँ
- भीमबेटका
- तुंगभद्रा नदी घाटियाँ
- पोटवार पठार (सिंधु और झेलम के बीच)
- संघो गुफा (पेशावर, पाकिस्तान के पास)

C. उच्च पुरापाषाण काल

- **विशेषताएँ**-
  - **होमो सेपियन्स की उपस्थिति।**
  - **कला** और **रीति-रिवाजों को दर्शाने वाली मूर्तियों** और **अन्य कलाकृतियों की** व्यापक **उपस्थिति।**
  - **राजस्थान**, **मध्य प्रदेश** और **महाराष्ट्र** में **40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्को की खोज**
  - **ऊंचाई** पर और **उत्तरी अक्षांशों में अत्यधिक ठंडी** और **शुष्क जलवायु।**
  - **उत्तर पश्चिम भारत** में **मरुस्थलों का व्यापक निर्माण**
  - **पश्चिमी भारत के जल** अपवाह तंत्र लगभग खत्म हो गए और नदी के **जलमार्ग** "पश्चिम की ओर" स्थानांतरित हो गए।
  - **वनस्पति आवरण** में **कमी।**

    मानव आबादी को जंगली खाद्य संसाधनों का सामना करना पड़ा- यही कारण है कि ऊपरी पुरापाषाण स्थल शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में बहुत सीमित हैं।
- **उपकरण** -
  - **हड्डी के औज़ार** - सुई, मछली पकड़ने के उपकरण, हार्पून, ब्लेड और बरिन उपकरण।
  - **तकनीकों के शोधन और तैयार उपकरण रूपों के मानकीकरण** के संबंध में एक चिह्नित क्षेत्रीय विविधता देखने को मिली।
  - **ग्राइंडिंग स्टैब्स** भी पाए - उपकरण उत्पादन की तकनीक में प्रगति।
- **प्रमुख स्थल:**
  - भीमबेटका (भोपाल के दक्षिण में) - हाथ की कुल्हाड़ी और क्लीवर, ब्लेड, खुरचनी यहाँ पाए गए हैं।
  - बेलन
  - सोन
  - छोटा नागपुर पठार (बिहार)
  - महाराष्ट्र
  - ओडिशा
  - आंध्र प्रदेश में पूर्वी घाट
  - अस्थि औज़ार केवल आंध्र प्रदेश में कुरनूल और मुच्छतला चिंतामणि गवी की गुफा स्थलों पर पाए गए है

मध्य पाषाण काल (Middle Stone Age)

- **ग्रीक शब्दों से व्युत्पन्न - 'मेसो' और 'लिथिक'** उर्फ 'मध्य पाषाण युग'।
- **यह होलोसीन युग** से सम्बन्धित ।
- **पैलियोलिथिक** और **नवपाषाण काल के बीच संक्रमणकालीन अवधि** ।
- **विशेषताएँ -**
  - गर्मियों में भारी वर्षा और सर्दियों में मध्यम वर्षा वाली **गर्म जलवायु**।
  - शुरू में **शिकारी** और **संग्रहणकर्ता** , लेकिन **बाद में पशुपालन** और **खेती** करने लगे ।

- **आदिम खेती** और **बागवानी शुरू** हुई।
- **पालतू** बनाने वाला **पहला जानवर** - **कुत्ते** का **जंगली पूर्वज।**
- **भेड़** और **बकरियां- सबसे आम पालतू** जानवर।
- **लोग गुफाओं** और **खुले मैदानों** के साथ-साथ **अर्द्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे।**
- **लोग परलोक में विश्वास करते थे** और इसलिए मृतकों को खाद्य पदार्थों और अन्य सामानों के साथ दफनाते थे ।
- **लोग जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनने लगे।**
- इस अवधि में **गंगा के मैदानों का पहला मानव उपनिवेश स्थापित** हुआ ।
- **अंतिम चरण** - खेती की शुरुआत

- **औजार - सूक्ष्म पाषाण -**
  - **ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय आकृतियों** में गूढ़-क्रिस्टली सिलिका, कैल्सेडनी या चर्ट से बने ।
  - **मिश्रित औजार**, **भाला**, **तीर** और **दरांती** बनाने **के लिए उपयोग** ।
  - ये **औजार छोटे जानवरों** और **पक्षियों का शिकार** करने में सक्षम बनाते थे।
- **चित्र -**
  - **कला प्रेमी** और **इतिहास** में **रॉक कला/ शैल चित्रकला की स्थापना** की।
  - **भारत में पहली शैल चित्र** - 1867 में सोहागीघाट (उत्तर प्रदेश) में मिली।
  - **विषयवस्तु**- जंगली जानवर और शिकार के दृश्य, नृत्य और भोजन संग्रह।
  - **चित्रकला में ज्यादातर लाल गेरू** लेकिन कभी-कभी **नीले-हरे, पीले या सफेद रंगों का इस्तेमा**ल किया गया है।
  - **सांपों का** कोई **चित्रण नहीं**।
  - **भीमबेटका शैल चित्र धार्मिक प्रथाओं** के विकास **के बारे में** एक अंदाजा देते हैं और लिंग के आधार पर श्रम विभाजन को भी दर्शाते हैं। पुरुषों को शिकार करते हुए दिखाया गया है जबकि महिलाओं को संग्रहण करते और खाना बनाते हुए दिखाया गया है।
- **महत्वपूर्ण स्थल -**
  - **बागोर (राजस्थान)-**
    - **भारत में सबसे बड़ा और सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित मध्यपाषाण स्थलों** में से एक।
    - कोठारी नदी पर।
    - **पशुओं को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण।**
  - **महादहा, दमदमा, सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) -**
    - **मानव कंकाल** के साक्ष्य।
    - **महादहा में**, एक **पुरुष** और एक **महिला को** एक **साथ दफनाया** गया था।
    - एक कब्रगाह में **कब्र देवता** के रूप में एक **हाथीदांत का पेंडेंट** पाया गया।
  - **भारत भर में मध्यपाषाण शैल चित्र स्थल-**
    - मध्य भारत जैसे भीमबेटका गुफाएं, खारवार, जौरा और कठोटिया (एमपी), सुंदरगढ़
    - संबलपुर (ओडिशा)
    - एजुथु गुहा (केरल)।
  - **लंघनाज (गुजरात) और बिहारनपुर (पश्चिम बंगाल)-**
    - लंघनाज- जंगली जानवरों (गैंडा, काला हिरण आदि) की हड्डियाँ।
    - कई मानव कंकाल
    - बड़ी संख्या में सूक्ष्म पाषाण

नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल

- साधरणतया इस काल की **अवधि 3500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के बीच** मानी जाती है।
- यूनानी भाषा का Neo शब्द नवीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसलिए इस काल को 'नवपाषाण काल' भी कहा जाता है।
- **विशेषताएँ -**
  - **होलोसीन भूवैज्ञानिक युग के अंतर्गत** आता है।
  - **'नियोलिथिक क्रांति'** (वी-गॉर्डन चाइल्ड द्वारा) के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि **इसने मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक जीवन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन** किए।
  - **आदमी खाद्य संग्रहकर्ता से खाद्य उत्पादक बन गया।**
  - **लिंग** और **उम्र के आधार पर श्रम** का **विभाजन**।
- **उपकरण और हथियार-**
  - **परिष्कृत** और घिसे हुए पाषण हथियार ।
  - **उत्तर-पश्चिमी-** घुमावदार धार वाली आयताकार कुल्हाड़ियाँ।
  - **उत्तर-पूर्वी** - आयताकार हत्थे और कभी-कभी कंधे वाले कुदाल के साथ पॉलिश पत्थर की कुल्हाड़ी।
  - **दक्षिणी**- अंडाकार सिरों और नुकीले हत्थे वाली कुल्हाड़ी।
- **कृषि -**
  - **रागी, चना** (कुलती) **और फल** उगाए गए।
  - साथ ही पालतू पशु, भेड़ और बकरियां भी पाले गए।
- **मृदभांड -**
  - **पहले हाथ से बने मृदभांड** देखे गए और फुट व्हील का इस्तेमाल देखा गया।
  - धूसर मृदभांड और पोलिशदार काले मृदभांड और शामिल हैं।

- **आवास-**
  - लोग मिट्टी और घास-फूंस से बने **आयताकार या गोलाकार घरों** में रहते थे।
  - उस समय के मनुष्य **नाव बनाना और कपास और ऊन से कपड़ा बुनना** आता था ।
  - मुख्य रूप से **पहाड़ी नदी घाटियों, शैल आश्रयों और पहाड़ी ढलानों में** बसे हुए थे।

नवपाषाण संस्कृति के दो चरण-
- **एसेरैमिक-** सिरेमिक का कोई सबूत नहीं।
- **सेरैमिक-** मिट्टी के बर्तनों, घरों, तांबे के तीरों, काले मृदभांडों , चित्रित मृदभांडों के साक्ष्य।

महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल

- **कोल्डीहवा (प्रयागराज के दक्षिण में स्थित)** – अपरिष्कृत हस्त निर्मित मृदभांडों के साथ गोलाकार झोपड़ियों का प्रमाण।
- **महागरा -** विश्व में चावल की खेती का सबसे प्राचीन प्रमाण।
- **मेहरगढ़** (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) **-** सबसे पुराना नवपाषाण स्थल, जहां लोग धूप में सुखाई गई ईंटों से बने घरों में रहते थे और कपास और गेहूं जैसी फसलों की खेती करते थे।
- **बुर्जहोम** (कश्मीर) **-** घरेलू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ उनकी कब्रों में दफनाया जाता था, लोग गड्ढों में रहते थे और परिष्कृत पाषाणों और हड्डियों से बने औजारों का इस्तेमाल करते थे।
- **गुफकराल** (कश्मीर) **-** शाब्दिक अर्थ "कुम्हार की गुफा"। यह नवपाषाण स्थल लोगो द्वारा गड्ढे में रहने, पत्थर के औजारों और कब्रिस्तानों के लिए प्रसिद्ध है।
- **चिरंद** (बिहार) **-** सींगों से बने हड्डी के औजार।
- **नेवासा -** सूती कपड़े के साक्ष्य।
- **पिकलीहाल, ब्रह्मगिरि, मस्की, टक्कलकोटा, हल्लूर (कर्नाटक) -** राख के टीले की खोज।

विन्ध्य की बेलन घाटी में **चोपानी मांडों** और **नर्मदा घाटी** के **मध्य भाग** में, **तीनों चरणों** (पुरापाषाण से नवपाषाण तक) **के साक्ष्य** पाए गए हैं- इस स्थल से **पशु अस्थि जीवाश्मों की खोज** भी हुई है।